



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 305]
No. 305]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 1, 1988/ज्येष्ठ 11, 1910
NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 1, 1988/JYAISTHA 11, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
separate compilation

जल-धुपन परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 जून, 1988

सा.का.नि. 667(अ) ---केन्द्र सरकार, महापत्तन न्याय अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 132 की उपधारा (1) के साथ पठित धारा 124 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, कलकत्ता मंडल द्वारा बनाए गए और इस अधिसूचना के साथ संलग्न अनुसूची में कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अगवामी अविष्य निधि विनियम, 1988 का अनुसूचित करने है।

2 उक्त विनियम, इस अधिसूचना के सरकारी राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होगा।

[फा. सं. पी. आर.-12016/13/86-पी.ई. I]

मोन्द्र नारायण, संयुक्त सचिव

अनुसूची

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट

अगवामी अविष्य निधि विनियम

अध्याय-1-प्राथमिक

प्रारंभिक--महान पोर्ट ट्रस्ट ऐक्ट 1963 (1963 का अधिनियम 38) द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए और इस अधिनियम में

सभी पुराने नियमों, विनियमों, उप-विधियों का अधिकरण करते हुए उप-रोक्षण नियमों, विनियमों या उप-विधियों के अंतर्गत ऐसे अधिकरण के पहले की गयी चीजों या करने के लिए छोड़ी गयी चीजों को छोड़कर कलकत्ता पत्तन का न्यासी मण्डल एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात्:-
विनियम--- संक्षिप्त नाम एवं प्रारंभ।

(i) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अगवामी अविष्य निधि विनियम, 1988 है।

(ii) ये विनियम राजपत्र में प्रकाशन तिथि से प्रवृत्त होंगे।

भित्तियां-2 विनियोग सीमा।

ये विनियम कलकत्ता पोर्ट के न्यासी बोर्ड के कर्मचारियों (हल्दिया उका कम्पलेक्स सहित) जो इन विनियमों के व्यवस्थाओं के तहत अगवामी अविष्य निधि के सदस्य हैं या जिन्हें निधि की सदस्यता दी जाये, पर लागू होंगे।

विनियम-3 परिभाषाएं

इन विनियमों में जब तक संदर्भ में दूसरी बात अवेक्षित न हो:-

(क) "न्य.स." से कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के तीन न्यायियों जिनमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और वित्त सलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी, पदेन, जो इनके अंगे निर्धारित विनियमों के अनुसार निधि के व्यवहार के लिए कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट का अधिकार होंगे, अभिप्रेत है।

(द) "अध्यक्ष" से कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष अभिप्रेत है।

(ग) "उपाध्यक्ष" से कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के तत्कालीन उपाध्यक्ष अभिप्रेत है।

(घ) "वित्त मलाहकार" व मुख्य लेखा अधिकारी" से कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के तत्कालीन वित्त मलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी अभिप्रेत है।

(ङ) "वरिष्ठ लेखा अधिकारी" से वे अधिकारी अभिप्रेत हैं जो निधि के न्यायियों के नियंत्रण के अधीन अंशदाताओं के भविष्य निधि लेखा के हिमायत को रखते हैं।

(च) "वैतन" से तत्पर्य उस राशि से है जिसे एक कर्मचारी मासिक रूप में पाता है तथा जिसमें महंगाई भत्ता, प्रोत्साहन भत्ता तथा अन्य कोई भत्ता शामिल हो, जैसा कि फण्डामेंटल लैब्रर के रूल 9(21) (क) में परिभाषित है। यदि ऐसा भत्ता या भत्ते कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के न्यासी मंडल द्वारा भविष्य निधि अंशदाता के लिए वैतन के रूप में गणना की जाती हो।

(छ) "अश्रित" से अश्रितों के निम्नलिखित में से किसी भी संबंधी अर्थात् पत्नी, माता-पिता, बच्चा, छोटा भाई, अविवाहित बहन तथा मृत पुत्र की विधवा और पुत्र, एवं जब अंशदायी के माता-पिता जिवित न हों, तो दादा-दादी, अभिप्रेत है। परंतु अंशदायी को यह सिद्ध करना होगा कि उसकी पत्नी कानूनी रूप से उसके अलग रहती है या जिस समुदाय की वह है उसके प्रथागत कानून, जिसके तहत वह अपने देखभाल करवाने की हकदार थी, के अंतर्गत अपना संबंध समाप्त कर दिया है, तब से वह इन विनियम के अनुसार आश्रित नहीं रहेगी, जब तक कि अंशदायी भिन्नित रूप से वित्त मलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी को यह न बता दे कि उसमें उसका संबंध पहले जैसा ही है। लेकिन महिला अंशदायी के मामले में यदि वह वित्त मलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी को यह लिखित सूचना दे कि उसके आश्रितों की सूची से उसके पति का नाम निकाल दिया जाये तो उसका पति तब तक इन विनियमों के अंतर्गत उसका आश्रित नहीं रहे जायेगा जब तक कि वह फिर से लिखित रूप में अपने पूर्व नोटिस को रद्द न करा दें।

(ज) "परिवार" से तात्पर्य —

(i) पुरुष अंशदायी के मामले में उसकी पत्नी या पति तथा और बच्चे या सौतेले बच्चे।

(ii) महिला अंशदायी के मामले में सदस्य के पति और बच्चे।

(iii) अंशदायी पर पूर्ण आश्रित माता-पिता, अविवाहित बहनें तथा छोटे भाई।

(झ) "छुट्टी" से कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट कर्मचारी (छुट्टी) विनियम, 1985 द्वारा स्वीकृत कोई भी छुट्टी अभिप्रेत है।

(ञ) "निधि" से फंडेड वर्ष अभिप्रेत है।

(ट) "वर्ष" से एम्प्लेयर वर्ष अभिप्रेत है।

अध्याय-11 - व्यवस्था, लेखे और निवेशों

विनियम-4 : नियंत्रण एवं प्रबंध

भविष्य निधि के सदस्यों की ओर से इस निधि पर कलकत्ता पोर्ट के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा वित्त मलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी, पदेन को मिलाकर बनाया गया न्यासी मंडल नियंत्रण करेगा। यह न्यासी मंडल भविष्य निधि के व्यवहार के लिए इसके आगे निर्धारित विनियमों के अनुसार कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को विनियमित होगा।

भविष्य निधि का प्रबंध वरिष्ठ लेखा अधिकारी करेगा, जो निधि के न्यायियों के नियंत्रण के अंतर्गत निधि के मामले का संचालन करेगा।

विनियम-5 : निधि का प्रचालन

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के लेखे से इस लेखे का बिल्कुल अलग रखा जायेगा। निधि की सभी प्राप्तिओं को भारतीय स्टेट बैंक में अलग खाते में रखा जायेगा। इस अलग खाते का प्रचालन अध्यक्ष या उपाध्यक्ष तथा वित्त मलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी के संयुक्त हस्ताक्षर से किया जायेगा। व्यवस्था संबंधी खर्चों को कलकत्ता पोर्ट वृद्ध करेगा।

विनियम-6 : निवेश

भविष्य निधि में संचित कुल राशि जिसकी तत्काल भुगतान की आवश्यकता न हो उसे भविष्य निधि न्यासी मंडल समय-समय पर हकों, ऋण-पत्रों, स्टॉक या अन्य केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के अन्य प्रतिभूतियों या ऋण पत्रों या धन लाभ के लिए अन्य प्रतिभूतियों, भारत में स्थापित विधान मंडल के किसी भी अधिनियम के प्राधिकार के अंतर्गत, किसी नगर पालिका निकाय की ओर से या उसके द्वारा पोर्ट ट्रस्ट या प्रेसिडेंसी शहर में शहर विकास न्याम या ऋण पत्र बांडों या अन्य प्रतिभूतियों जैसे मूल धन एवं ध्याज दोनों पर केन्द्र या राज्य सरकार दोनों द्वारा पूर्णतया बेशर्त गारंटी दी गयी हो, या स्टेट बैंक ऑफ इंडिया तथा इसके सहायक बैंकों और/या अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों में इंडियन ट्रस्ट एक्ट 1882 (1882 का III) की धारा 20क में अंतर्विष्ट नियंत्रण इस प्रकार के किसी भी निवेश पर लागू नहीं होगा। निधि के न्यायियों द्वारा खरीदी गयी प्रतिभूतियां तथा मियादी जमा निधि के नाम होगा और इस निधि की राशि की वृद्धि के लिए, जैसी आवश्यकता हो, वे प्रतिभूतियां समय-समय पर बेची जा सकती है, या मियादी जमा को भी समय-समय पर अध्यक्ष या उपाध्यक्ष तथा वित्त मलाहकार व मुख्य लेखा अधिकारी के संयुक्त हस्ताक्षर से उठाया जा सकता है।

निधि के लेखे, जिसमें सभी प्रतिभूतियों के मूल्य होने हैं, का बाजार मूल्य प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को जा होगा, उसी आधार पर निर्धारित होगा तथा प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को ही लेखे का बन्द किया जायेगा और भारत सरकार के नियंत्रक व महा लेखा परीक्षक या ऐसा व्यक्ति जिसे कि वे इस संबंध में निपुण करे, के द्वारा लेखा परीक्षा की जायेगी।

विनियम-8 : वार्षिक रिपोर्ट

वर्ष का काम समाप्त होने के साथ यथाशीघ्र वरिष्ठ लेखाधिकारी प्रमाणित लेखे के साथ एक वार्षिक रिपोर्ट तैयार करेगा। तथा उसे कलकत्ता पोर्ट के न्यासी मंडल का पेश करेगा तथा यथाशीघ्र सभी अंशदारियों को उनके लेखे का एक वार्षिक विवरण भी दिया जायेगा।

विनियम-9 : निधि को कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को देयता

वार्षिक लेखा परीक्षा के समय यदि निधि में किसी प्रकार का घाटा बाढ़े वह प्रतिभूतियों के मूल्यांकन से या अन्य कारण या कारणों से हो तो कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट उसकी देयता को स्वीकार करते हुए घाटे की राशि की पूर्ति करेगा। तथा निधि के न्यायियों की मांग के अनुसार निधि विनियमों के अंतर्गत घाटे की राशि का या उग राशि के किसी हिस्से का अथवा निधि के न्यायियों की राय में चाहे वह राशि 1 लाख रुपये हो या अंशदाताओं की सुरक्षा के लिए राशि का एक हिस्सा या पूरी राशि भुगतान, जो भी उचित हो, पोर्ट ट्रस्ट करेगा।

अध्याय III—संरचना एवं नामांकन

विनियम—10(क) सबस्ता—शत

निम्नलिखित के लिए संरचना अनिवार्य होगी—

संरचना

- (i) कोई भी स्थायी कर्मचारी (पीम-रेटेड "ए" ग्रेड) मजदूरों के रूप में नियुक्त तथा उक्त लेबर बोर्ड के मजदूरों से भिन्न जैसा कि कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अधिनियम 1986 के विनियम 12 के खंड (सी) में उल्लिखित है, जो 1 जून 1962 को या उसके बाद कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट की सेवा में आये है।
- (ii) सभी अस्थायी कर्मचारी जो कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट की सेवा में 1 जून 1962 की या उसके बाद (पीम-रेटेड "ए" ग्रेड) श्रेणी के मजदूरों, उक्त लेबर बोर्ड के कर्मचारी जैसा कि कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अधिनियम 1986 के विनियम 12 के खंड (सी) में उल्लिखित है सम्मिलित हुए तथा लगातार एक वर्ष की सेवा की है।
- (iii) "ए" श्रेणी के कर्मचारी जो 1 जुलाई, 1986 का या उसके बाद कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट सेवा में आये।

विनियम—10 (ख)

- (i) वे सभी स्थायी कर्मचारी जो 31 मई, 1962 से सेवारत हैं पीम-रेटेड "ए" श्रेणी के कर्मचारियों से भिन्न यदि वे पेंशन स्कीम में आना चाहें तो सम्मिलित हो सकते हैं। वे सभी कर्मचारी जो 31 मई, 1962 से सेवा में हैं यदि वे पेंशन चाहते हैं तो एक वर्ष की लगातार सेवा के बाद सम्मिलित हो सकते हैं।
- (ii) 1 जुलाई, 1966 से सेवारत "ए" ग्रेड मजदूर अगर उन्हें या पेंशन योजना में सम्मिलित हो सकेंगे।

विनियम—11 (क) नामांकन—एवं
नामांकन की शर्तें—

प्रत्येक अंशदान को करने आश्रित या आश्रितों को नामित करने की इजाजत दी जायेगी। यदि उनका उपर्युक्त विनियम 3(बी) के अनुसार कोई आश्रित नहीं है, तो कोई भी व्यक्ति उनके पूरे या हिस्से में जमा कुल राशि का कोई हिस्सा प्राप्त कर सकता है, यदि वह सेवा में रहने पर जाये या यदि वह सेवा निवृत्ति के बाद मरे लेकिन भुगतान होता से पहले।

परन्तु अंशदान कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के अंशदायी भविष्य निधि में पहले नामांकित कर दिया हो, जिसमें वह निधि में सम्मिलित होने से पहले अंशदान करता रहा, यदि ऐसी निधि है में उसका जमा राशि को उसके जमा निधि में स्थानान्तरित कर दिया गया हो, तो इस विनियम के अंतर्गत इसे तब तक उचित नामांकन समझा जायेगा, जब तक कि वह इस विनियम के तहत तथा नामांकन नहीं करता है।

परन्तु आगे शर्त यह है कि अंशदाता द्वारा आश्रित से भिन्न नामांकित कोई व्यक्ति वाला और शुद्ध हो जायेगा", यदि यह मामूला हो जाये कि अंशदाता का विराहित आश्रित है फिर भी वह उपरोक्त नामांकन को विनियम 11 (सी) के अनुसार निरस्त नहीं करता है।

विनियम—11 (ख)

अंशदाता नामांकन को समुचित हस्ताक्षर एवं दस्तावेजों द्वारा प्रमाणित करके बरिष्ठ लेखा अधिकारी के कार्यालय में भेज कर पंजी-

कृत करा दे जहां वे रिकार्ड के रूप में रखेगी जो फार्म 1 में लिखित रूप में होता चाहिए, जो कि निश्चित के रूप में इसके साथ संलग्न है।

इस प्रकार पंजीकृत मनोनीत तब तक बना रहेगा, जब तक यह नहीं मरता या जब तक अंशदाता का नामांकन इसके साथ बनाए गये रूप में रद्द न कर दिया गया हो, तब मनोनीत को इस प्रकार की राशि का प्राप्ति तथा निपटान का पूरा हक होगा, क्योंकि अंशदाता ने उसे नामित किया है। यदि मनोनीत अंशदाता से पहले मर जाये तो जहां तक उस मनोनीत का संबंध है, नामांकन वाला एवं शुद्ध हो जायेगा।

विनियम—11 (ग)

लिखित एवं बर्तीकृत नामांकन जैसा कि ऊपर बताया गया है केवल तभी रद्द किया जा सकता है जब अंशदाता अपने दायों से तथा उचित रूप में पंजीकृत दो शर्तों के अनुप्रमाण से फार्म II में से फार्म बरिष्ठ लेखा अधिकारी के कार्यालय में, जो इसके बाद परिशिष्ट 11 के रूप में संलग्न है, निरस्त करता है। अंशदाता उसी समय उपरोक्त उप-विनियम (ख) में उल्लिखित नियमों के अनुसार गया नामांकन या नामांकनों को कर दें।

विनियम 11 (ख)

उपरोक्त नियमों के अनुसार निधि वाली नामांकनों का पूरा निपटारा करेगा, लेकिन अंशदाता के मरने से पहले वर्तमान नामांकन रद्द किया गया हो, और बरिष्ठ लेखा अधिकारी को पंजीकरण के लिए नामांकन किया गया हो।

विनियम 11 (ड) :

कोई भी अंशदाता जो हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध नहीं है या जो इंडियन मरसेशन ऐक्ट 1925 (XXXIX) के प्रभाव में स्थित है, विवाह या पुनर्विवाह करने पर उनके द्वारा पेश नामांकन वाला एवं शुद्ध हो जायेगा।

विनियम 11 (न) :

अंशदाता द्वारा किया गया हर नामांकन तथा हर रद्द को तात्परे उन तारीख को लागू होगी जिस तारीख को बरिष्ठ लेखा अधिकारी का प्राप्ति होगी।

अध्याय-4—अंशदान एवं व्याज

विनियम 12 (क) अनिवार्य अंशदान

इस विनियमों के अनुसार अंशदाता इस निधि में अंशदान करेगा, परन्तु कोई निमित्तक हो तो उसकी निमित्तक अवधि का अंशदान नहीं दिया जायेगा या जो कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट की सेवा में निवृत्त होने के बाद पुनर्नियोजित हुए है, उनकी पुनर्नियोजित अवधि का अंशदान नहीं किया जायेगा।

परन्तु अवकाश पूर्ण छुट्टी के दौरान नियुक्त व्यक्ति का अवकाश पूर्ण छुट्टी की उम्र अवधि, जिसमें की वह छुट्टी पर रहेगा, के लिए निधि में अंशदान देना होगा, लेकिन पुनर्नियुक्ति के होने पर हो।

विनियम 12 (ख)

अंशदान का राशि का निर्धारण द्वारा रख्य निम्नलिखित शर्तों के अधीन किया जायेगा।

(i) उसे पूरे राशि में दिया जाये।

(ii) बाकी कोई भी राशि जमा कर सकते हैं, लेकिन वह राशि उनके वेतन के 5% प्रतिशत में कम न हो और न ही वह उनके पूरे वेतन से अधिक हो।

(iii) उपर्युक्त शर्तों के अधीन अंशदान राशि की बर्ष के दौरान वरिष्ठ लेखा अधिकारी का एक माह की नोटिस देकर किसी भी समय बटाया बढ़ाया जा सकता है।

विनियम 13 (क) : छुट्टी, प्रतिनियुक्ति या निलम्बन के दौरान अंशदान।

छुट्टी, या निलम्बन के दौरान अंशदान

पूर्व सेवानिवृत्ति या अस्थायी छुट्टी या प्रतिनियुक्ति छुट्टी को छोड़कर किसी भी अंशदायी के अंशदान को जब वह या तो किसी प्रकार की छुट्टी के कारण अनुपस्थित हो, या निर्धारित उमर के पूरे/अधिकांश वेतन, जैसी स्थिति हो, पर निर्धारित किया जायेगा। फिर भी अंशदाता अपने विकल्प पर औसत वेतन छुट्टी या एक महीने की या 30 दिन की छुट्टी यथा स्थिति, को छोड़कर छुट्टी की किसी भी अवधि के दौरान अंशदान नहीं कर सकता। परन्तु जब किसी अंशदाता को विदेश सेवा से स्थानांतरित किया जाता है या उसे प्रतिनियुक्ति पर भेजा जाता है तब निधि अधिनियम के तहत उसे उसी तरह समझा जायेगा मानो उसे स्थानांतरित या प्रतिनियुक्ति पर भेजा ही नहीं गया, बशर्त कि अंशदाता अपनी छुट्टी की अवधि पेश करते समय ही छुट्टी के दौरान अंशदान न करने संबंधी सूचना दे दे।

विनियम 13 (ख) :

निलम्बन की अवधि में कोई अंशदाता निधि में अंशदान नहीं करेगा। परन्तु निलम्बन अवधि के अन्तिम हो जाने के बाद पुनर्बहाल होने पर अंशदाता उस अवधि के बकाया अंशदान को एक मूल्य राशि या किस्तों में या कोई भी राशि, जो कि उसके निलम्बन अवधि की राशि से अधिक न हो, देने के विकल्प का अनुशासित होगा।

नोट : कार्यहीन अवधि के दौरान अंशदाता अंशदान नहीं करेगा।

विनियम 14 : व्याज

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को अंशदाता के लेखे में उसका व्याज ऐसे दर पर, जिसे कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट समय समय पर बैंक में निर्धारित कर संकल्प ले, जमा करेगा, व्याज की गणना हर अंशदाता के खाते में मासिक जमा पर किया जायेगा तथा उस वार्षिक संयोजित किया जायेगा।

अध्याय V—पेशगी व वापसी

विनियम 15 : अंशदाता का पेशगी

निम्नलिखित में से किसी भी उद्देश्य के लिए निधि से वित्त सहायकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी का अनुमति से वरिष्ठ लेखा अधिकारी अंशदाता को पेशगी मंजूर कर सकता है :—

(i) अंशदाता या उसके/उसकी परिवार का कोई सदस्य या उच्च शिक्षा संबंधी खर्च जिसमें अंशदायी या उसके परिवार के सदस्य भी शामिल हैं की यात्रा के भुगतान के लिए अधिकतम 10,000/- रु. लेकिन अंशदायी के जमा अंशदान का 1/3 राशि से अधिक न हो या छह महीने का वेतन, जो भी कम हो, या उसके परिवार के किसी सदस्य के लिए या निम्नलिखित मामलों में अंशदाता या उसके परिवार के किसी सदस्य के उच्च शिक्षा संबंधी खर्च की पूति जिसमें अंशदाता या उसके परिवार के किसी सदस्य की यात्रा व्यय शामिल हो, अर्थात् :—

(क) भारत से बाहर शिक्षा के लिए हाई स्कूल के ऊपर तकनीकी व्यावसायिक कोर्स की शिक्षा के लिए,

(ख) हाई स्कूल के ऊपर भारत में किसी भी विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग या अन्य तकनीकी या विशेष कोर्स के लिए परन्तु अध्ययन कोर्स की अवधि तीन वर्षों से कम न हो।

(ii) अधिकतम 5,000/- रु. लेकिन अंशदाता के लेखे में जमा अंशदान का 1/3 राशि या तीन महीने का वेतन जो भी कम हो भारत में पहाड़ी/समुद्री किनारे जाने या शिक्षित प्रमाण-पत्र पर विदेश यात्रा के लिए अपने खर्च या अपने—

(क) परिवार के किसी सदस्य के खर्च के लिए भुगतान के लिए;

(ख) अपने बीमारी या अपने परिवार के किसी सदस्य की बीमारी, जोकि विधिवत् प्रमाणित की गयी हो, के संबंध में किये गये खर्च के लिए भुगतान;

(ग) अनिवार्य खर्च का भुगतान जिसे अंशदायी प्रमाणित अभ्यास के अनुसार अंशदाता को अत्येष्टि एवं अन्य उत्सवों के संबंध में खर्च करना पड़ता है।

(iii) अंशदाता या उसकी बेटी या बेटा या आश्रित बहन, बेटी के विवाह के संबंध में होने वाले खर्च के लिए अधिकतम 15,000/- रु. लेकिन अंशदाता के लेखे में जमा राशि के 1/3 से अधिक न हो या उसके छह महीने का वेतन बशर्त कि यदि पेशगी देने को मांगे से 1 महीने के भीतर यदि यदि नहीं हुई तो पेशगी राशि को लौटा दिया जायेगा।

(iv) इस विनियम के अधीन जब किसी अंशदाता का पहले ही अधिम की मंजूरी दे दी गयी हो, तब भी उसे इस विनियम के अधिनियम परवर्ती अधिम का मंजूरी दी जा सकता है यद्यपि पुराना अधिम पूर्ण रूप से नहीं भी चुकाया गया हो, परन्तु फिर भी, बाद के मंजूर अधिम में से पुराना अधिम का बकाया काट लिया जायेगा।

विनियम 16 : पेशगी की वसूली

विनियम 15 (i) या 15 (ii) के अन्तर्गत की गयी पेशगी को 30 महीने मासिक किस्तों में वसूल किया जायेगा और विनियम 15 (iii) के अन्तर्गत दी गयी पेशगी को अंशदाता की तनख्वाह से 48 महीने मासिक किस्तों में वसूल किया जायेगा। प्रत्येक किस्त की राशि अंशदाता द्वारा दिया जाने वाला मासिक अंशदान की राशि से कम नहीं होना चाहिए। पेशगी का वसूली का आदेश पेशगी देने के बाद वाले महीने में, जिसमें पूरे महीने अंशदाता ह्यूटी पर है, होगा।

जब अंशदाता निर्वाह भत्ता लेता है, तो अंशदाता का विनियोजन 15(i), (ii) या (iii) के तहत मंजूर पेशगी का वसूली उनके विहित सहमति के बिना नहीं की जायेगी।

विनियम 17 : पेशगी का अनुचित प्रयोग

इन विनियमों में किसी बात के न होने पर यह मंजूरीदाता प्राधिकारी को यह सदेह होता है कि विनियम 15 के अन्तर्गत अधिम के रूप में उठाई गयी राशि का उपयोग जिस उद्देश्य से उठाया गया था उसमें न करके अन्य कामों में खर्च किया गया है, तो वह अंशदाता या अपने सदेह से संबंधित कारणों की सूचना देते हुए उसे सूचना प्राप्ति के 15 दिनों के भीतर लिखित रूप में स्पष्ट करने के लिए कहेंगे। यदि मंजूरीदाता प्राधिकारी को निर्धारित 15 दिन की अवधि के भीतर प्राप्त अंशदाता द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण मान्य न हो तो वह अंशदाता को विचाराधीन राशि को निधि में तुरन्त लौटाने के लिए निर्देश देगा या यदि अंशदाता ऐसा नहीं करता है, तो मंजूरीदाता प्राधिकारी उनके वेतन से एक मूल्य राशि काट लेने का आदेश देगा, चाहे अंशदाता छुट्टी पर क्यों न हो। यदि लौटायी जानेवाली राशि अंशदाता की पति/पत्नी के व्यय से अधिक हो तो मासिक किस्त के रूप में तब तक वसूल किया जायेगा जब तक कि पूरी राशि की वापसी न हो जाये।

नोट:— विनियम में परिलिखित "शब्द" के अस्तित्व की जाँच भारत सरकार नहीं है।

विनियम 13 : गृह-निर्माण निकासी—अप्रत्यापनीय

(क) अध्यक्ष या उपाध्यक्ष की मजूरी से ऐसा कोई भी अंशदाता जिसकी सेवा 20 वर्ष की हो चुकी हो या, उसके/उसकी निवृत्ति पर सेवा निवृत्ति से पहले 10 वर्ष के भीतर, जो भी पहले हो, किसी भी समय उसकी निधि में आवेदन निधि के पूर्वगामी वर्ष के 30 दिसम्बर तक सञ्चित राशि से निकासी की मंजूरी निम्नलिखित प्रयोजनों में से एक या अधिक के लिए दी जायेगी :—

(क) को एक मुश्त में अधिकतम 90 प्रतिशत तक या निम्न में ;

(i) निर्माण की वास्तविक लागत या अपने उपयोग के लिए समुचित आवास गृह जिसमें गृह स्थान का लागत शामिल है या उसके अपने उपयोग के लिए बनाया प्लाट, बशर्ते, की उसका अपना मकान न हो ;

(ii) स्पष्ट रूप से निर्माण या उपयुक्त मकान के लिए जिसमें उसके अपने प्रयोग के लिए या बना बनाया प्लाट की कीमत, लिए गये ऋण की बकाया राशि की चुकोती के लिए ;

(iii) किसी मकान या प्लाट जिसे कि अशदायी पहले से ही पाया हो, उसके पुनर्निर्माण या किसी प्रकार का योग या परिवर्तन संबंधी खर्च की पूर्ति के लिए ;

(iv) पैतृक गृह जो कि कार्य स्थान से भिन्न है, के मरम्मत, योग या परिवर्तन या रख-रखाव के खर्च की पूर्ति के लिए।

(ख) के लिए अधिकतम 6 महीने तक का वेतन या उस जमा का 50 प्रतिशत जो भी कम हो—

(i) अपने निवास के लिए जमीन की खरीद हेतु जिस पर मकान बनाने के लिए।

(ii) उपयुक्त (i) में कहे गये प्रयोजन के लिए स्पष्ट रूप से लिए गये ऋण के कारण किसी भी बकाए राशि की चुकोती ;

(iii) उपयुक्त मद (i) के तहत खरीदी गयी जमीन पर मकान बनाने के लिए।

(ग) निकासी की तारीख से 3 महीने के भीतर ही मकान हेतु जमीन की खरीद का काम सम्पन्न करना होगा। निकासी की तारीख से 6 महीने के भीतर निर्माण कार्य प्रारंभ करना होगा तथा प्रारंभ की तिथि से 1 वर्ष के भीतर निर्माण कार्य पूरा करना होगा। फिर भी यदि मकान खरीदा गया हो या इसी प्रयोजन के लिए पहले ऋण लिया गया हो तो उसे चुकाना होगा। निकासी तारीख से तीन महीने के अन्दर ही उसे ऐसा करना होगा। बैररमैन या डिप्टी बैररमैन पर्याप्त कारणबश मकान निर्माण कार्य प्रारंभ या पूरा मकान खरीदने के लिए या मकान विभाजन के लिए या मकान बनाने हेतु पहले लिये गये वैधितिक ऋण की चुकोती के लिए जैसा वे उचित व समीचीन समझे, मजूरी दे सकते हैं।

जैसाकि ऊपर कहा गया है यदि निर्धारित अवधि में ली गयी धनराशि का उम्मीद काम के लिए उपयोग नहीं किया जाता या वास्तविक खर्च में अधिक होना है या उपयुक्त क अनुमान चुकोती नहीं की जाती है तो पूरी या बची राशि, जैसी स्थिति हो, को वरिष्ठ लेखा अधिकारी को एक मुश्त में विनियम 11 में

उपबंधित दर पर तत्काल व्याज सहित वापस कर दिया जाये। विवेक संपादन के संबंध में स्थानान्तरण, पुनःस्थानान्तरण, पंजीकरण, स्टैम्प से संबंधित वास्तविक खर्च को गृह स्थान की लागत और/या गृह लागत के एक हिस्से के रूप में संपणना की जाये। अशदायी का हर वर्ष 31 दिसम्बर या उससे पहले उस प्रयोजन के लिए बिलित प्रपत्र में वार्षिक घोषणापत्र पेश करना होगा तथा उसे बैररमैन, डिप्टी बैररमैन की संतुष्ट करना होगा, यदि ऐसा करने के लिए कहा जाये, तो कर पावती, अधिकार पत्र आदि की प्रस्तुती द्वारा यह सिद्ध करना होगा कि गृह स्थान या गृह उसके पूर्ण अधिकार में है तथा जब तक वह सेवा में है तब तक उससे अलग नहीं हो सकता तथा यह उत्तरदायित्व लेना है कि वह स्थानान्तरण, बिक्री वंशक, दान बदली, पट्टा या अन्य किसी प्रकार से बिना बैररमैन या डिप्टी बैररमैन के निश्चित पूर्व अनुमति के उनके अधिकार से अलग नहीं हो सकता। सेवा-निवृत्ति से पहले किसी भी समय ऐसी पूर्ण अनुमति के उनके अधिकार में अलग नहीं हो सकता। सेवा-निवृत्ति से पहले किसी भी समय ऐसी पूर्ण अनुमति के बिना यदि वह मकान स्थल या मकान का बिक्री या उसे ऋण अस्त करना है या हग विनियम के किसी भी उपबन्ध का भंग करता है तो ली गयी पूर्ण रकम तथा निकासी के महीने में उस पर उर्ध्वत दर से हुए व्याज तुरन्त एक किम्ब में उसे चुकाना होगा। ऐसा न करने पर अशदायी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी (इस विनियम के तहत निकासी के लिए विस्तृत कार्य प्रणाली अशदायी संबंधी निधि के अनुलग्नक I के रूप में संलग्न है)।

विनियम 14 : अप्रत्यापनीय वैवाहिक निकासी

अंशदाता की 20 वर्ष की सेवा हो जाने के बाद किसी भी समय बैररमैन, डिप्टी बैररमैन चुकोती की याचिका के बिना भी निकासी मंजूर कर सकते हैं। या उसके निवृत्ति की आयु पर सेवा-निवृत्ति से 10 वर्ष पहले जो भी पहले हो, निधि में उसके नाम में सञ्चित राशि से माध्यमनया 6 महीने की तनख्वाह या सञ्चित राशि, जो भी कम हो, में से लगाने (अपनी बेटी/बेटे या/आश्रित बहन/ बहनों की शादी के संबंध में होनेवाले खर्च की पूर्ति के लिए) इस सीमा में अधिक की निकासी के लिए निम्नलिखित बातों की ध्यान में रखने हुए मंजूरी अधिकारी अंशदाता के नाम निधि में हुए जमा राशि का 3/4 तक मंजूर कर सकते हैं।

(i) अंशदाता की हैमियत ;

(ii) निधि में तथा उसके नामसे जमा राशि संलग्न अनुलग्नक III व IIIक में उचित रूप से भर कर अंशदाता घोषणा अवश्य पेश करें।

अध्याय VI—विकल्प या विधि का स्थानान्तरण

विनियम 20 : अंशदाता का लेखा

प्रत्येक अंशदाता के लिए उसके मासिक अंशदान तथा उस पर हुए व्याज को प्रदर्शित करने वाले लेखा का खतम-प्रतग रखा जाएगा।

विनियम 21 : लेख का स्थानान्तरण—जबत यात्रा के लिए विकल्प

यदि कोई कर्मचारी जो कि कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अंशदायी अधिकार निधि का अंशदाता है यदि चाहे तो उस पेशन योजना में जाने का विकल्प दिया जाएगा तथा अंशदाई के अधिकार निधि में उसके नाम सञ्चित उसका अंशदान तथा उस पर हुए व्याज की राशि को इस निधि में उसके नाम स्थानान्तरित कर दिया जाएगा।

विनियम 22 : अर्थ सेवा से स्थानान्तरण

कोई कर्मचारी जो किसी सरकार से पोर्ट ट्रस्ट, सरकारी कार्य निधि में बिना सेवा भग के कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को सेवा में सम्मिलित।

हुआ जिसमें वह भविष्य निधि अंशदाना रहा, यदि वह चाहे तो वहाँ भविष्य निधि में उसके नाम से निधि धन इस निधि में स्थानान्तरित किया जा सकता है।

अध्याय-VII

विनियम-23. भारतीय जीवन बीमा निगम में बीमा के लिए भुगतान जीवन बीमा स बी 1 का भुगतान अंशदान की कुछ राशि तथा उस पर हुए व्याज जो कि अंशदाता के नाम निधि में जाता है निम्नलिखित शर्तों के अधीन भारतीय जीवन बीमा निगम में बीमा पालिसी के प्रिमियम के चाहे आंशिक या पूरा भुगतान के प्रयोजन के लिए आवेदन किया जा सकता है।

(1) अपने जीवन के लिए अंशदाता द्वारा किया गया भारतीय जीवन बीमा निगम की बीमा पालिसी (अर्थात् एन्डोमेन्ट पालिसी) प्रथम प्रिमियम के बाद या सुपुर्ष से पहले देय प्रिमियम, जैसी स्थिति हो, उसके द्वारा दिया गया हो, यदि अंशदाता इस न्यायियों को सुपुर्ष करना चाहे तो उसे इस प्रयोजन के लिए बताए गए 'छा फार्म' पर लिखित वचन देने पर बरिष्ठ लेखा अधिकारी उसे स्वीकार करेगा।

(2) संवेधित विभाग के माध्यम से अधिष्ठित दस्तावेजों के साथ अंशदाता से पालिसी पाने के बाद (अर्थात् पालिसी बाण्ड, प्राधिकारी पत्र, सुपुर्ष प्रपत्र, तथा अन्तिम प्रीमियम पालिसी, यदि पालिसी धारक द्वारा एक से अधिक प्रीमियम दिया गया हो) तथा अंशदाता छा फार्म में निर्धारित शर्तों के अनुपालन के लिए सहमत है तब पालिसी बाण्ड एवं सुपुर्ष फार्म को भविष्य निधि अनुभाग द्वारा रखे गए कार्यालय रजिस्ट्रारों में सुपुर्ष को लिखित नोट करने के बाद पंजीकरण के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम को भेजने के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाएगी। भारतीय जीवन बीमा निगम से पालिसी बाण्ड वापस पाने पर उसे बरिष्ठ लेखा अधिकारी के कार्यालय में निरापेक्ष अभिरक्षण के अधीन रखा जाएगा।

(3) यदि पालिसी के प्रीमियम के भुगतान की प्रणाली निमाही हो तो न्यायियों को सुपुर्ष से पहले अंशदाता उसे वार्षिक प्रीमियम में बदलवा देगा। अधिष्ठित पालिसी किसी भी ह्रास में भारतीय जीवन बीमा निगम को बंधक नहीं दिया जाएगा।

(4) अंशदाता द्वारा अधिष्ठित बीमा पालिसी का प्रीमियम बरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा अंशदाता की ओर से उसके अंशदान लेख में बिकलत द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाएगा तथा दी गई प्रिमियम राशि को उसके वेतन से 12 महीने किस्मों में वसूल किया जाएगा। तथा उसके अंशदान लेख में निर्धारित कालम में जिसमें इसी प्रयोजन के लिए व्ययस्था है, जमा करा दिया जाएगा। संबंधित विभाग को अंशदाता के मासिक वेतन विवरण में उस राशि को नियमित रूप से कट लेने का कर जाएगा।

(5) अंशदाता द्वारा बिना वेतन छुट्टी लेने की प्रवृत्ति या अग्रहता के लेख में संचित जमा में से भारतीय जीवन बीमा निगम का देय प्रिमियम का भुगतान किया जाएगा तथा उसके पुनः दृष्टा में अग्रत पर उसके वेतन से वसूल किया जाएगा। अगर निधि में जमा गेव भारतीय बीमा निगम को देय प्रिमियम से कम हो, तब भारतीय जीवन बीमा निगम को इसकी सूचना देते हुए प्रिमियम का भुगतान स्थगित कर दिया जाएगा।

(6) जब अंशदाता सेवा में हो और उस समय उसकी पालिसी परिपक्व हो जाए, ऐसी स्थिति में भारतीय जीवन बीमा निगम से परिपक्वता मूल्य वसूल कर अंशदाता के नाम जमा कर दिया जाएगा तथा अंशदाता को लौटा दिया जाएगा। यदि कोई पालिसी पुरानी योजना के अंतर्गत है जिसके प्रिमियम का आंशिक भुगतान अंशदाता के लेख में किया जाता हो तथा जो बाद में वेतन कटौती योजना में बदल दिया गया हो, परिपक्व हो जाने पर भारतीय जीवन बीमा निगम से वसूल परिपक्व मूल्य को अंशदाता को उसके अंशदान लेखा से दिया गया प्रिमियम घटाकर वापस लौटा दिया जाए, जाएगा।

(7) यदि कोई अंशदाता अपनी सेवा-निवृत्ति से पहले अपना बीमा पालिसी या न्यायियों के आदेश में वापस लेना चाहे, तो बरिष्ठ लेखा अधिकारी उसे वैसा करने की अनुमति देगा तथा भारतीय जीवन

बीमा निगम को समुचित सूचना देते हुए अंशदाता को पालिसी बाण्ड लिखित, पुनः सुपुर्ष कर देगा। अन्तिम प्रीमियम की गेव राशि, यदि कोई हो, को उसे निधि को विसर्जित किया जाएगा।

(8) यदि कोई अंशदाता पालिसी परिपक्व होने से पहले ही सेवा निवृत्त हो जाए, तो उसे तत्काल बीमा पालिसी पुनः सुपुर्ष कर उसे हस्तांतरित करना होगा।

(9) परिपक्वता के समय यदि ऐसी प्रवृत्ति हो कि न्यायियों के पत्र में बीमा पालिसी का लिखित सुपुर्षगी नहीं हुआ था या भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा सुपुर्षगी का पंजीकरण अनुपालन नहीं हुआ तब बरिष्ठ लेखा अधिकारी भारतीय जीवन बीमा निगम से परिपक्वता मूल्य की वसूली की जिम्मेदारी नहीं लेगा तथा अंशदाता को अपना पालिसी बाण्ड तुरन्त वापस लेने के लिए बतला जाएगा।

(10) यदि कोई अंशदाता नौकरों की अवधि में मर जाए तथा किसी भी पालिसी के तहत देय राशि, जो कि उसके द्वारा न्यायियों को सुपुर्ष किया गया था, का भुगतान भारतीय जीवन बीमा निगम को सूचित करते हुए तुरन्त बन्द कर दिया जाएगा। तथा भारतीय जीवन बीमा निगम से न्यायियों द्वारा बीमा पालिसी का मृत्यु दावा आय की वसूली की जाएगी। यदि पालिसी लिखित उसे सुपुर्ष किया गया हो तब मृत अंशदाता के भविष्य निधि में देय राशि को उसके कानूनी उत्तराधिकारी/उत्तराधिकारियों को देने के लिए लावारिश जमा लेखा में जमा कर दिया जाएगा। लेकिन गैर अध्यापित पालिसी के मामले में तब मृत अंशदाता के कानूनी उत्तराधिकारी/अधिकारियों को सूचित करते हुए बाण्ड पालिसी को भारतीय जीवन बीमा निगम को भेज दिया जाएगा ताकि वे भारतीय जीवन बीमा निगम से सीधे संपर्क कर के मृत दावा आय की वसूली कर सकें।

(11) उपर्युक्त विनियमों में किसी बात का न होना पर भी पुरानी योजना के तहत न्यायियों को पहले से सुपुर्ष पालिसियों के प्रिमियम का भुगतान अंशदाता के लेख से होता रहेगा।

अध्याय-VIII-देय भविष्य निधि का निगम

विनियम-24. नौकरों छोड़ने पर अंशदाता को भुगतान

अंशदाता की सेवा-निवृत्ति, सेवा त्याग या मृत्यु के बाद निधि में उसकी संचित राशि तथा व्याज तथा सम्भव ग्रीन दे दिया जाएगा। भुगतान करने की तिथि के पहले कैलेंडर महीने के अन्त तक उसके लेख में व्याज मा किया जाएगा।

परन्तु अंशदाता के नियंत्रण के बाह्य परिस्थितियों के कारण विनियम होने या समझौता करने में प्रशासनिक देर होने पर उस महीने के बाद जिसमें राशि देय होगा उसके लेख में 1 वर्ष के अग्रत तक व्याज जमा होता रहेगा।

विनियम-25. अंशदाता के बकाए का भुगतान

जब अंशदाता की निधि में संचित राशि देय हो गई हो विनियम 24 के अनुसार बरिष्ठ लेखा अधिकारी निम्नप्रकार से राशि का निगदान करेगा—

(i) अंशदाता को भुगतान करे, या

(ii) यदि अंशदाता मर गया हो तो उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों को निम्नलिखित प्रकार से देगा—

(क) यदि विनियम के तहत नामांकित वैध हो, तब वह राशि या उसका हिस्सा, जो नामांकित में रखा गया हो, उन नामांकित को या जैसा कानून द्वारा उनकी ओर भुगतान प्राण करने के लिए प्राधिकृत व्यक्ति को दिया जाएगा

(ख) यदि कोई वैध नामांकन न हो या राशि को केवल एक हिस्से में विहित न माना जाये या पुराने राशि से सर्वथा हो या उसमें कोई हिस्सा जिसमें नामांकन के कोई संबंध नहीं है जो 5000/2 से अधिक न हो और इस राशि के निपटान संबंधी एक कमिशननामा का नाटिम हो तथा उसमें यह सिद्ध करने का इरादा हो कि उस बरिष्ठ सेवा अधिकारी को नहीं दिया गया है सदस्य का मूल्य के महीने एक महीने भीतर या ऐसी नोटिम दी गई हो लेकिन सदस्य की मृत्यु के दस महीने के भीतर इस प्रकार का कमिशननामा संप्रसारित नहीं किया गया हो। यदि चैयरमैन या डिप्टी चैयरमैन को ऐसा लगे कि कोई व्यक्ति इस राशि को प्राप्त करने का हक्का है तो भविष्य निधि अधिनियम का 4(1)(ख) की शर्तों के अनुसार उसे भुगतान कर दिया जाएगा।

(ग) उपर्युक्त खण्ड (1) या (ii) के तहत यदि राशि किसी भी व्यक्ति को दी जायेगी नहीं है तो भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 की (XXXIX), भविष्य निधि अधिनियम 1925 की धारा 4(1)(ii) (iii) की शर्तों के अनुसार यह राशि उस व्यक्ति को दिया जाएगा जो कि प्राइवेट पेश पर सके या प्रशासन पक्ष जिसमें उसे मृतक अश्वदाता की संपत्ति के प्रशासनिक रूप में उसे भुगतान करने की मजूरी दी गई हो।

विनियम - 26 नाबालिग का भुगतान

गार्डियन एण्ड वार्ड ऐक्ट (1890 का VIII) के तहत नाबालिग बच्चों के भुगतान का उत्तरी और से उत्तरे गार्डियन या कानूनी प्राधिकृत किसी अन्य व्यक्ति को किया जायेगा। परन्तु हिन्दू नाबालिग के भुगतान को उसकी माता तथा सुसहमान नाबालिग के भुगतान को उसके दादा को किसी गार्डियनशिप प्रमाणपत्र को बिना पत्र किये दिया जायेगा।

विनियम - 27 पागलों के भुगतान

विनियमों के तहत यदि अश्वदाता/कोई व्यक्ति जिसे भुगतान किया जाना है या जिसे पालिसी पुनः अधिपति किया जाना है, पागल हो तो भारतीय पागल अधिनियम, 1912 (1912 का 4) के तहत नियुक्त प्रबंधक या कानूनी प्राधिकृत कोई अन्य व्यक्ति को भुगतान या पुनः अधिपति किया जायेगा।

विनियम - 28 कुर्बी से निरापदता

भविष्य निधि अधिनियम 1925 (1925 का 19) की धारा 3 के उपबन्धों के तहत न तो अश्वदाता और न ही उसकी ओर से कोई व्यक्ति इन विनियमों में गण्य रूप से उपबंधित को छोड़कर निधि के ब्याज के संबंध में दावे का हकदार नहीं होगा या सेवा पुस्तक में अश्वदाता के नाम में जमा किसी राशि के भुगतान की मांग नहीं करेगा।

विनियम - 29 सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी तथा निवृत्ति पूर्व छुट्टी का भुगतान

सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी की मजूरी होने पर अश्वदाता का अनुज्ञा दिया जा सकता है अध्यादेश या उपअध्यादेश की इच्छानुसार निधि में उसके नाम उसी वर्ष के जिसमें वह 31 दिसम्बर का सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर जा रहा हो के सेवा परीक्षाक्रम जमा में से 90% तक या उसमें से कुछ हिस्सा बरिष्ठ सेवा अधिकारी को एक आवेदन पत्र कर वापस ले सकता है। इस प्रकार की अनुमति उसे इस शर्त के अधीन दी जा सकती है जब कि अश्वदाता किसी भी असाधारण मामले में सेवा निवृत्ति नहीं होगा, मजदूरी का शर्त रूप में मजदूरी राशि वापस ले जायेगी। इस विनियम के अंतर्गत दिया गया भुगतान अश्वदाता को सेवा छुट्टी के दौरान उचित

अश्वदाता के जारी रखने के एक तथा जमा राशि पर ब्याज के एक को शामिल नहीं करेगा। यदि अश्वदाता को पूर्व निवृत्ति छुट्टी को मजदूरी मिलती है या न तो अध्यादेश या उपअध्यादेश की इच्छा से उचित निधि में मौज्जा राशि में 60% राशि निकालने का अनुमति दी जा सकती है या जिसमें से कोई हिस्सा तत्काल अनुवर्ती वर्ष के 31 दिसम्बर का जिसमें अश्वदाता का पूर्व निवृत्ति छुट्टी को मजूरी मिली है, बरिष्ठ सेवा अधिकारी को आवेदन करने पर। फिर भी यदि अश्वदाता कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के क्वार्टर में रहता है, तो उपर्युक्त जमा में से पचास प्रतिशत हो उठाने का अनुमति दी जायेगी।

अध्याय 9 - विविध

विनियम 30 विनियमों की व्याख्या

विनियमों की व्याख्या

इन विनियमों के संबंध में किसी प्रकार के प्रश्न के उत्तर पर कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के अध्यादेश का निर्णय अन्तिम होगा।

विनियम - 31 निरमल व वचन

(1) इन विनियमों के प्रारम्भ होने पर कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अश्वदाता भविष्य निधि नियम या इसका प्रारम्भ के तत्काल पहले लागू आवेदन जहाँ तक कि इन विनियमों में किसी भी मामले के लिए निर्दिष्ट व्यवस्था बालू नहीं रहेगी।

(2) किसी अश्वदाता के भविष्य निधि देय के निपटान से संबंधित कोई मामला, जो इस विनियम के प्रारम्भ से पहले ही सेवा निवृत्त हो गया हो, का निपटान पुराने नियमों के उपबन्धों के अनुसार किया जायेगा, मानो ये विनियम बने ही नहीं थे।

(3) उप-विनियम (2) के उपबन्ध के अधीन किया गया कोई भी या पुराने नियम के अधीन की गयी कोई कार्यवाई इन विनियमों के उपबन्धों के तहत उनसे संबंधित की गयी समझी जायेगी।

निरमल व वचन

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट का परिशिष्ट—1

अश्वदाता भविष्य निधि विनियम (विनियम 18 दृष्टि) गृह निर्माण प्रयोजन के लिए भविष्य निधि राशि से निकासी से संबंधित नियम (क्रिया-विधि)

निम्नलिखित प्रयोजना के लिए निकासी की जा सकती है -

- 1 भूमि की खरीद तथा उस पर मकान निर्माण हेतु लगने वाली लागत।
- 2 अना बनाया समुचित मकान या प्लाट की उपलब्धि।
- 3 मकान या प्लाट हेतु लिए गये ऋण की चुकौती।
- 4 पुनर्निर्माण या अनिश्चित निर्माण या अश्वदाता के अपने मकान में किसी प्रकार का प्रत्यक्षरूप या प्लाट या उसके पूर्वजों के मकान के लिए खर्च। उपर्युक्त मामलों में निकासी मजूरी के पहले कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को चाहिए कि वह प्रेजिडेंसी मजिस्ट्रेट कलकत्ता के गमक्ष सलन घोषणा एवं निम्नलिखित वादवादा की पूर्ति कर के अश्वदाता से इम्ताक्षर करा कर अधि-बचन करा ले।

(अ) विनियम मद 1

(क) उसे कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट का मतलब करना चाहिए कि मांगी गयी राशि वास्तव में संपत्ति खराबने के लिए है तथा उसके अधिकार में है या उस स्थान पर जहाँ मकान बनाने का सम्भाव है उस पर नुस्खे मकान निर्माण के अर्थों पर का इरादा रखता है।

(ख) उसे कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को संतुष्ट करना चाहिए कि ऐसी अन्य वैयक्तिक तलाश जैसे संश्लेषण के पास हो के साथ ही नहीं राशि संपत्ति या प्रस्तावित प्रकार के निर्माण में पर्याप्त होगा।

(ग) उस मन टाइटल डीटम को प्रस्तुती द्वारा या कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट द्वारा प्रत्यक्ष या निदेशित कि वह भार मकान प्रस्तावित त्रय की संपत्ति और मुक्त तथा निविदाद ही भर्जन करेगा।

(घ) ऋण की मजूरी की एक सप्ताह के भीतर ही कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के निरीक्षण हेतु बिना काररनामा (बयाना पत्र) तथा खरीद पूरी होने के 15 दिन में हस्तांतरण पत्र प्रस्तुत करना होगा। कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट द्वारा मजूर ऋण में संपत्ति खरीदने के बाद ही हस्तांतरण पत्र की प्रस्तुती संभव है।

(उ) कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट इस संघ में जो भी पर्चा करेगा उसे (संश्लेषण) को ही जमा पड़ेगा।

(व) विषय मद II

जैसा कि उपर्युक्त (घ) क (क), (ख), (ग) (घ), तथा (उ) में है।

(स) विषय मद III

उमे कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को दस्तावेज एवं कागजातो की प्रस्तुती द्वारा इस बात की संतुष्टि करनी होगी कि गृह निर्माण या अपने लिए मकान/प्लॉट के भर्जन के प्रयोजन के लिए ही स्पष्ट रूप में लिया गया ऋण बना हुआ है।

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट

अशदायी भविष्य निधि नामांकन

प्रपत्र (विनियम II (ख) देखिए)

पूर्व नामांकन का व्योम

वैयक्तिक लेखों में नोट किया

नाम पत्रमाम भविष्य निधि लेखा में मैं एमद्दा घोषणा करता हूँ कि मेरे मरने पर कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के अशदायी भविष्य निधि में मेरे नाम जमा राशि का मेरे आश्रितों के बीच उनके नामों के साम नीचे दर्शाए गए के अनुसार बाँटा जायेगा।

मनोनीत(तों) के नाम (बड़ अक्षरों में) मनोनीतों का पता अशदाता के साथ संबंध नामांकन निधि को मनोनीत सक्षम राशि या हिस्सा की उम्मीद

स्थान

दिनांक

अशदाता का हस्ताक्षर

(1) नाम पता पत्नी पत्नी हस्ताक्षर

(2) नाम पता पत्नी पत्नी हस्ताक्षर

नोट नमबन्ध वैध रहेगा यदि मनोनीत निधि 3 (जी) में 9 परिभाषित आश्रित के अनुसार तलाश किया गया हो अथवा (क) पुरुष अशदाता 20 न के अधिनियम में 21 परिभाषित पिता, बच्चे नानाग्राम भाई अश्विज हति तन्त्र तथा मृत पुत्र की विधवा तथा जब अशदाता का मान लिया कि तलाशों के बाद आर्द्ध अर्द्ध मरिता अशदाता (2) नाम पर पति दत्तया मा पुत्र की विधवा व बच्चे उससे आश्रित माना-पिता तथा पति के माना-पिता।

अधिशुद्ध II

वर्ष का पोट टुम्ब

अशुद्धि अधिशुद्धि निर्दिष्ट

प्रकार II (विनिर्देश II (ग) देखें)

नामोक्त रकम के लिए नोटिफिकेशन प्रपत्र

नाम

पदनाम

अधिशुद्धि निर्दिष्ट नम्बर

मेरी मध्य हो जाने की स्थिति में कलकत्ता राउट रूम के अधिशुद्धि अधिशुद्धि निर्दिष्ट में मेरे नाम से संबंधित धनगण के निपटान के संबंध में

इ पक्ष में मेरे द्वारा किया गया वापसा में पदनाम रकम के रूप में

साक्षात् रूप में मेरे द्वारा इस वर्ष लज्जित नही

दिनांक

हस्ताक्षर

हस्ताक्षर

पता

पेशा

हस्ताक्षर

पता

पेशा

अधिशुद्धि अधिशुद्धि,
अधिशुद्धि निर्दिष्ट ।

आवश्यक वापसा के लिए

हस्ताक्षर

दिनांक

पदनाम

अंगदायी भविष्य निधि विनियम का परिशिष्ट III (विनियम 19) अवनसी वैवाहिक निहायी की प्राप्ति के लिए सारणी पत्र।

1. बेटा या बहन (कुल्हन) या बेटा (कुल्हा)
2. अन्य बेटियों, बहनों, व बेटों जो अविवाहित हैं के नाम
3. नाम, प्रस्ताबित कुल्हे के पिता का नाम व पता
4. अस्यायी तिथि व विवाह स्थान
5. क्या उपर्युक्त बहन पूर्ण रूप से उस पर आश्रित है.

मैं एतद्वारा यह घोषणा करता हूँ कि यदि किसी कारणवश निहायी की प्राप्ति के एक महीने के भीतर वह ऐसी बहाई गई अस्यायी जो कि मन्त्री या अधिकारी द्वारा अनुमोदित हो, के भीतर यह विवाह नहीं हुआ तो उस प्रतीति के लिए मैं दाग को गयी वेगो पुरो रहम बाँध कर दूँगा।

मैं अपने और घोषणा करता हूँ कि मेरे उपर्युक्त बयान सत्य हैं और मेरे बयान में अगर कोई बात झूठ निकले तो मेरे विरुद्ध अगुनतः कार्रवाई की जायेगी।

आवेदक के हस्ताक्षर या बाँए अंगूठे का निशान
भविष्य निधि लेखा सं.

ऐसे सबस्यों के मामले में जो बायें अंगूठे का निशान देंगे या अंग्रेजी भाषा को छोड़कर अन्य भाषा में स्थापित करेंगे।
इसे पढ़ कर आवेदक को बताएँ।

हस्ताक्षर पत्रनाम

अनुभाग प्रधान

अनुभाग

निम्नलिखित में से किसी एक का प्रमाणपत्र पेश किया जाय:—

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री पता के पास
कु मारी नामक विवाह योग्य बेटा/बहन, है तथा उपर्युक्त पिता व पुत्री/माई, व बहन को मैं जानता हूँ।

हस्ताक्षर

एम.एल.ए./राजपत्रित अधिकारी/मृत्तिमीपल्लवी के
आयुक्त/उच्च माध्यमिक स्कूलों के प्रबन्धाध्यापक/
ग्राम पंचायत के सभापति

कार्यालय मोहर

दिनांक

अंगदायी भविष्य निधि नियमों के परिशिष्ट-III क (विनियम-19)

विवाह की तिथि से एक महीने के भीतर आवेदक द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला जोरगा पत्र।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, भविष्य निधि,

कसकता पोस्ट ट्रस्ट।

विभागाध्यक्ष के माध्यम से

मैं एतद्वारा यह घोषणा करता हूँ कि मेरी बेटा/बहन का बहाई पत्राङ्क त्रिके लिए मुझे अपने
भविष्य निधि लेखा सं. से ए. की निहायी का अनुमति मिली है दिनांक को समारोह
तथा धूमधाम से मनाया गया है।

सदस्य के हस्ताक्षर/बाँए अंगूठे का निशान

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/भविष्य निधि

अप्रेषित

विभागाध्यक्ष

चि.इ. यदि आवेदक समझा जाय सबस्य द्वारा दिए गये पत्र पर विवाह समारोह की आवश्यकता के बारे में सतुष्टि के लिए वरिष्ठ लेखा अधिकारी
भविष्य निधि द्वारा पूछनाछ की व्यवस्था की जाये

पॉलिसी पर चिपकाए जाने वाले पॉलिसी मुद्रांगी का प्रपत्र

(विनियम नं. 23 देखें)

पॉलिसी सं.

कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के अगुवाई अधिनियम 23 (i) के तहत में एगुआर भारतीय जीवन बीमा निगम के तहत पॉलिसी सं. में निहित अगुआ पूरा अधिकारी, टाइटल तथा विहित हित कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट को देता है ताकि की परिपक्वता के बाद पॉलिसी में कथित राशि तथा उस पर हुए लाभों को वसूल कर सके जो कि मेरे नाम कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट अगुवाई अधिनियम में जमा होगा। मेरा निश्चित है पूर्ण मेरी मृत्यु हो जाने पर, मेरी इच्छा है कि अगुवाई अधिनियम में जमा धन-राशि को मेरे मनोनीत को या भुगतान से पहले मातृत्व के मरण होने पर मेरी बहन के निधियों को या मेरे कर्तु को उत्तराधिकारी को, यदि मैं इच्छा पकड़ता हूँ। अगर मैं सेवा छोड़ दूँ तो ऐसी स्थिति में मांगने पर मुझे पॉलिसी को पुनर्मुद्रांगी कर हस्तान्तरित कर दिया जाये।

दिनांक, पर. यह के दिन 19.....

गवाह

(हस्ताक्षर)

..... अगुवाई अधिनियम लेखा/सं.

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 1th June 1988

G.S.R. 667(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of section 124, read with sub-section (i) of Section 132 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Central Government hereby approves the Calcutta Port Trust Non-Contributory Provident Fund Regulations, 1988 made by the Board of Trustees for the Port of Calcutta and set out in the Schedule annexed to this notification.

2. The said regulations shall come into force on the date of publication of this notification in the Official Gazette.

YOGENDRA NARAIN, Jt. Secy.

(F. No. PR-12016/13/86-PE.I)

SCHEDULE

CALCUTTA PORT TRUST

Non-Contributory Provident Fund Regulations

CHAPTER-I—PRELIMINARY

Preliminary

In exercise of the powers conferred by Clause (b) of Section 28 read with Section 124 of the Major Port Trusts Act 1963 (Act 38 of 1963) and in supersession of all previous Rules, Regulations, Bye-laws

framed in this respect except things done or omitted to be done under the said rules, regulations or bye-laws before such supersession, the Board of Trustees of the Port of Calcutta hereby makes the following regulations, namely :—

Regulation—1 : Short Title and Commencement.

- (i) These Regulations may be called the Calcutta Port Trust Non-contributory Provident Fund Regulations, 1988.
- (ii) These Regulations shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

Regulation—2 : Extent of Application

These Regulations shall apply to all the employees of the Board of Trustees for the Port of Calcutta (including Haldia Dock Complex) who are members of Non-contributory Provident Fund or who may be admitted to membership of the Fund under the provisions of these Regulations.

Regulation—3 : Definitions

In these Regulations, unless the context otherwise requires :—

- (a) 'TRUSTEES' shall mean a Board of three Trustees consisting of the Chairman, Deputy Chairman and Financial Adviser and Chief Accounts Officer of the Calcutta Port Trust, ex-officio, who shall be responsible to the Calcutta Port Trust for the conduct of the Fund in accordance with the Regulations hereinafter laid down.
- (b) 'Chairman' shall mean the Chairman for the time being of the Calcutta Port Trust.

- (c) 'Deputy Chairman' shall mean the Deputy Chairman for the time being of the Calcutta Port Trust.
- (d) 'Financial Adviser & Chief Accounts Officer' shall mean the Financial Adviser & Chief Accounts Officer for the time being of the Calcutta Port Trust.
- (e) 'Senior Accounts Officer' shall mean the Officer to whom the duty to maintain the Provident Fund Account of the subscribers has been assigned subject to the control of the Trustee of the Fund.
- (f) 'Pay' shall mean the amount as defined in Rule 9(21)(a) of the Fundamental Rules drawn monthly by an employee and includes Dearness allowance, Incentive payment and any other allowance if such an allowance or allowances are allowed to be counted as pay for the purpose of Provident Fund subscriptions by the Board of Trustees for the Port of Calcutta.
- (g) 'Dependent' shall mean any of the following relatives of the subscriber, namely, the wife parent, child, minor brother, unmarried sister and deceased son's widow and child and where no parent of the subscriber is alive, a paternal grand-parent.

Provided that if a subscriber proves that his wife has been judicially separated from him or has ceased under the customary law of the community to which she belongs to be entitled to maintenance she shall thenceforth be deemed to be no longer a dependant in matters to which these Regulations relate unless the subscriber intimates to the Financial Adviser and Chief Accounts Officer in writing that she shall continue to be so regarded and in the case of a female subscriber, if she by a notice in writing to the Financial Adviser & Chief Accounts Officer expresses her desire to exclude her husband from the list of dependants her husband shall thenceforth be deemed to be no longer a dependant of the subscriber in matters to which these regulations relate unless the subscriber subsequently cancels such notice in writing.

(h) 'Family' shall mean :—

- (i) In the case of a male subscriber, the wife or wives and children or step children of a subscriber.
 - (ii) In the case of a female subscriber the husband and children of a member.
 - (iii) Parents, unmarried sisters and minor brothers wholly dependent on the subscriber
- (i) 'Leave' shall mean any variety of leave recognised by the Calcutta Port Trust's Employees (Leave) Regulations, 1985.
- (j) 'Fund' shall mean the Calcutta Port Trust Non-Contributory Provident Fund.
- (k) 'Year' shall mean calendar year.

CHAPTER—II—Management, Accounts and Investments

Regulation—4 : Control and Management

The Fund shall be controlled on behalf of its members by a Board of three Trustees consisting of the Chairman, The Deputy Chairman and the Financial Adviser & Chief Accounts Officer of the Calcutta Port Trust, ex-officio, who shall be responsible to the Calcutta Port Trust for the conduct of the Fund in accordance with the regulations hereinafter laid down

The Fund shall be managed by the Senior Accounts Officer who shall conduct its affairs subject to the control of the Trustees of the Fund.

Regulation—5 : Operation of the Fund.

The Accounts of the fund shall be kept entirely separate from those of the Calcutta Port Trust. All receipts of the Fund shall be paid into a separate account at the State Bank of India. This separate account shall be operated over the joint signatures of the Chairman or the Deputy Chairman and the Financial Adviser & Chief Accounts Officer. The expenses of management shall be borne by Calcutta Port Trust.

Regulation—6 : Investment

All moneys not immediately required for the purpose of the Fund shall, from time to time be invested by the Trustees of the Fund in the Promissory Notes, Debentures, Stock or other securities of the Central Government or any State Government or the Debentures or other securities for money issued, under the authority of any Act of Legislature established in India, by or on behalf of any municipal body, Port Trust or City Improvement Trust in any Presidency town or in debenture bonds or other securities, both the principal thereof and the interest whereon shall have been fully and unconditionally guaranteed by either the Central or State Governments or in fixed deposits with the State Bank of India and its subsidiaries and/or with other nationalised bank and the restrictions contained in Section 20A of the Indian Trusts Act, 1982 (II of 1982) shall not apply to any such investments. The securities purchased and the fixed deposits made by the Trustees of the Fund shall be held in the name of the Fund and such securities may be sold or the fixed deposits may be realised from time to time under the joint signatures of the Chairman or Deputy Chairman and the Financial Adviser and Chief Accounts Officer in order to raise such sum as may be required for the purpose of the Fund.

Regulation—7 : Annual Audit and Accounts

The Accounts of the Fund in which the value of all securities held shall be assessed at the market values ruling on the 31st December of each year, shall be closed as at 31st December in each year and audited annually by the Comptroller and Auditor General of India or such person as may be appointed by him in this behalf.

Regulation—8 : Annual Report

An annual report accompanied by the Certified accounts for the year shall be made by the Senior Accounts Officer as soon after the year's working as possible and shall be submitted to the Board of Trustees of the Calcutta Port and each subscriber shall be furnished as soon as possible with an annual statement of his/her account.

Regulation—9 : Calcutta Port Trust's liability to the Fund

The Calcutta Port Trust will accept liability for any deficiencies found in the Fund at the time of the yearly audit whether from depreciation of securities or other cause or causes and will pay the amount of the deficiency or any portion of that amount on, and in accordance with the demand of the Trustees of the Fund if the Trustees of the Fund consider the payment of a part or the whole amount is advisable either to meet claims payable under the regulations of the Fund or for the security of the subscribers.

CHAPTER—III**MEMBERSHIP & NOMINATIONS****Regulation—10(a) : Membership—Conditions Member-Ship.**

Membership shall be compulsory for :—

- (i) Any permanent employee (other than those recruited as piece-rated 'A' category workers and employees of Calcutta Dock Labour Board as referred to in Clause (C) of Regulation 12 of Calcutta Port Trust Contributory Provident Fund Regulation) who joined the Calcutta Port Trust's service on or after 1st June 1982.
- (ii) All temporary employees who joined the Calcutta Port Trust's service on or after 1st June, 1962 (other than piece-rated 'A' Category workers, employees of Calcutta Dock Labour Board as referred to in Clause (C) of Regulation 12 of Calcutta Port Trust Contributory Provident Fund Regulation and reemployed retired employees) after a continuous service of one year.
- (iii) 'A' Category workers who joined the Calcutta Port Trust's service on or after 1st July, 1966.

—10(b):

- (i) All permanent employees (other than piece-rated 'A' Category workers) in service on 31st May, 1962, if they opt for Pension scheme, shall join the Fund. All temporary employees in service on 31st May, 1962, if they opt for pension shall join the Fund after a continuous service of one year.
- (ii) 'A' Category workers in service on 1st July, 1966 if they opt for pension scheme shall join the Fund

Regulation—11(A) : Nomination—Conditions**Conditions of nomination**

Every subscriber shall be permitted to nominate a dependant or dependants and if he/she has no dependant or dependants within the meaning of Regulation 3(g) above, any person to receive the whole or any portion of the total amount standing to his/her credit in the Fund if he/she dies while in service or if he/she dies after retirement but before payment is made.

Provided that the nomination already made by the subscriber in the Calcutta Port Trust's Contributory Provident Fund to which he/she was subscribing before joining the Fund shall, if the amount to his/her credit in such Fund has been transferred to his/her credit in the Fund be deemed to be nomination duly made under this regulation until he/she makes a fresh nomination in accordance with this Regulation.

Provided further that the nomination made by a subscriber of any person other than a dependant shall be treated as null and void if the subscriber acquires any dependent subsequently by marriage and even if he/she does not cancel the aforesaid nomination in accordance with Regulation 11(c).

11(b) :

All nominations must be in writing in Form I, annexed hereto as Appendix I, duly signed by the subscriber and attested by two witnesses and must be sent to and registered in the office of the Senior Accounts Officer where they shall be retained for record. The nominee so registered shall be and remain, until he/she dies or until the subscriber's nomination has been revoked in the manner hereinafter mentioned fully entitled to receive and give discharge for such amount as the subscriber has nominated him to receive. If a nominee dies before the subscriber, the nomination, so far as it relates to such nominee, shall be treated as null and void.

11(c) :

A nomination in writing and registered as aforesaid can only be revoked when a complete cancellation in Form II annexed hereto as Appendix II, has been made by the hand of the subscriber and attested by two witnesses duly registered in the office of the Senior Accounts Officer. The subscriber may at the same time, make a fresh nomination or nominations in accordance with the procedure stated in sub-regulation (b) above.

11(d) :

Payment made to a nominee registered as aforesaid shall be a full discharge to the Trustees of the Fund provided that before the death of a subscriber the existing nomination has not been cancelled and a fresh nomination received by the Senior Accounts Officer for registration.

11(e) :

Marriage or re-marriage of a subscriber who is not a Hindu, Mohammedan, Buddhist or other person exempted from the operation of the Indian Succession Act, any nomination already submitted by him/her —

11(f) :

Every nomination made and every notice of cancellation given by a subscriber shall, to the extent it is valid, take effect on the date on which it is received by the said Senior Accounts Officer.

CHAPTE—IV

SUBSCRIPTIONS & INTEREST

Regulation—12(a) : Compulsory Subscription

A subscriber shall subscribe to the Fund in accordance to these Regulations, except during the period when he/she is under suspension or the period of re-employment after final retirement from the Calcutta Port Trust's service.

Provided that a person re-employed during leave preparatory to retirement shall continue to subscribe to the Fund for the period upto which he/she would have remained on leave preparatory to retirement but for re-employment.

12(b) :

The amount of subscription shall be fixed by the subscriber himself subject to the following conditions namely :

- (i) It shall be expressed in whole rupees.
- (ii) It may be any sum, so expressed, not less than $8\frac{1}{3}$ per cent of his/her pay but not more than his/her full pay.
- (iii) The amount of subscription, subject to the above conditions, may be enhanced or reduced once at any time during the course of a year on giving one month's notice to the Senior Accounts Officer.

Regulation—13(a) : Subscription during leave, deputation or suspension.

The subscription of any subscriber when he/she is absent either on leave of any kind except post-superannuation or refused leave or on deputation shall be assessed on his/her full average pay as the case may be. A subscriber may, however, at his/her option not subscribe during any period of leave, other than leave on average pay or earned leave of less than one month's or 30 days duration as the case may be.

Provided that when a subscriber is transferred to foreign service or sent on deputation he/she shall remain subject to the regulation of the Fund in the same manner as if he/she were not so transferred or sent on deputation.

Provided further that the subscriber must intimate his/her election not to subscribe during leave at the time of submitting leave application. Failure to make due and timely intimation shall be deemed to constitute an election to subscribe.

13(b) :

A subscriber shall not subscribe to the Fund during a period of suspension

Provided that a subscriber on re-instatement after a period passed under suspension shall be allowed the option of paying in one sum, or in instalments, any sum not exceeding the maximum amount of arrears of subscription permissible for that period.

Note : A subscriber need not subscribe during a period treated as 'dies-non'.

Regulation—14 : Interest

The Calcutta Port Trust shall credit interest to a subscriber's account as at 31st December each year, at such rate as the Calcutta Port Trust may from time to time decide by a resolution in meeting calculated on the monthly balance at the credit of each subscriber compounded yearly.

CHAPTER-V—ADVANCES & WITHDRAWALS

Regulation—15 : Advances to Subscribers

The Senior Accounts Officer may, with the approval of the Financial Adviser & Chief Accounts Officer, grant advances to subscribers out of the Fund for any of the following purposes :—

On higher Educational ground

(i) Upto a maximum of Rs. 10,000 but not exceeding $\frac{1}{3}$ rd of the sum at credit represented by the subscriber's subscriptions or six months' pay whichever is less to pay for the passage or himself/herself or any member of his/her family or to meet the cost of higher education including where necessary the travelling expenses of the subscriber or any member of his/her family in the following cases, namely—

- (a) for education outside India, for an academic, technical, professional or vocational course beyond the high school stage;
- (b) for any medical, engineering or other technical or specialised course in India beyond the high school stage provided that the course of study is for not less than 3 years.

(ii) Upto a maximum of Rs. 5,000 but not exceeding $\frac{1}{3}$ rd of the sum at credit represented by the subscriber's subscriptions or 3 months' pay whichever is less—

- (a) to pay for the expenses of himself/herself or any member of his/her family proceeding to Hill/seaside station in India or on a travel abroad on medical certificate;
- (b) to pay expenses incurred in connection with duly certified illness of himself/herself or any member of his/her family;
- (c) to pay obligatory expenses which pay customary usage the subscriber has to incur in connection with funerals and other ceremonies.

(iii) Upto a maximum of Rs. 15,000 but not exceeding $\frac{1}{2}$ the sum at credit represented by the subscriber's subscriptions or six months' pay whichever is less to pay the expenses in connection with the

marriage of the subscriber or daughter or son or dependent sister on condition that if for any reason the marriage does not take place within a month from the date of advance, the amount so advanced shall be refunded in full.

(iv) When an advance has already been granted to a subscriber under this regulation, a subsequent advance may be granted to him/her under this Regulation even though the previous advance may not have been repaid in full, provided, however, that the unpaid balance of the previous advance shall be deducted from the advance subsequently granted.

Regulation—16 : Recovery of Advances

An advance made under Regulation 15(i) or 15(ii) hereof shall be recovered by not more than 30 equal monthly instalments and an advance made under Regulation 15(iii) hereof shall be recovered by not more than 48 equal monthly instalments by deduction from the salary of the subscriber to whom it is made. The amount of each instalment shall, however, be not less than the subscriber's monthly subscription. The deduction will begin not later than the first complete month throughout which the subscriber is on duty after the advance has been made.

Recovery of advance granted to a subscriber under Regulations 15(i), (ii), or (iii) shall not be made, except with the subscriber's written consent while he/she is in receipt of subsistence allowance.

Regulation—17 : Wrongful use of Advance

Notwithstanding anything contained in these Regulations, if the sanctioning authority has reason to doubt that money drawn as an advance from the Fund under Regulation 15 has been utilised for a purpose other than that for which sanction was given to the drawal of the money, he shall communicate to the subscriber the reasons for his doubt and require him/her to explain in writing and within 15 days of receipt of such communication whether the advance has been utilised for the purpose for which sanction was given to the drawal of the money. If the sanctioning authority is not satisfied with the explanation furnished by the subscriber within the said period of 15 days, the sanctioning authority shall direct the subscriber to repay the amount in question to the Fund forthwith or, in default, order that the amount be recovered by the deduction in one sum from the emoluments of the subscriber even if he/she is on leave. If the total amount to be repaid be more than half the subscriber's emoluments, recoveries shall be made in monthly instalments till the entire amount is repaid by him/her.

Note : The term 'emoluments' in the Regulation does not include subsistence allowance.

Regulation—18 : House Building withdrawal—Non-refundable

(A) Subject to the sanction of the Chairman or Deputy Chairman, withdrawals may be granted at any time after the completion of 20 years' service of a subscriber or within 10 years before the date of his/her retirement on superannuation, whichever is earlier, from the amount standing at his/her credit in

the Fund on the 31st December of the year preceding the date of application for one or more of the following purposes —

(a) Upto a maximum of 90 per cent in lump sum or in instalments to

- (i) meet the actual cost of building or acquiring a suitable dwelling house for his/her own use including the cost of house site or already-built flat for his/her own use, provided he/she does not already own a house;
- (ii) repay an outstanding amount on account of loan expressly taken for building or acquiring a suitable house including the cost of house site or a ready-built flat for his/her own use;
- (iii) meet expenses for reconstructing or making additions or alterations to a house or a flat already owned or acquired by a subscriber;
- (iv) meet expenses for renovating, additions or alterations or upkeppment of an ancestral house at a place other than the place of duty.

(B) Upto a maximum of 6 months' pay or 50 per cent of such credit whichever is less to—

- (i) Purchase a house site for building a house thereon for his/her residence;
- (ii) Repay any outstanding amount on account of loans expressly taken for the purpose stated in (i) above;
- (iii) Construct a house on a site purchased under item (i) above.

(B) The purchase of a house site should be completed within 3 months from the date of withdrawal. Construction of the house should be commenced within 6 months from the date of withdrawal and should be completed within a period of 1 (one) year from the date of commencement of construction. If, however, the house is to be purchased or redeemed or a private loan previously raised for the purpose has to be repaid, this should be done within three months from the date of withdrawal. The Chairman or Deputy Chairman may for sufficient reasons grant such extension of time for commencement or completion of construction of a house or for the purchase or redemption of a house or for repayment of a private loan previously raised for the purpose as they think fit and proper.

If as mentioned above the amount withdrawn is not so utilised within the prescribed period or it exceeds the actual expenditure or repayment as aforesaid, the whole amount or any excess, as the case may be shall be refunded to the Senior Accounts Officer, forthwith in one lump sum together with interest thereon at the rate provided in Regulation 14. The actual expenditure incurred in connection with the stamp, registration etc. of the deeds of conveyance, reconveyance etc. relating to the transactions may be reckoned as part of the cost of house site and/or house. The subscriber shall submit an annual declaration in the form prescribed for the purpose on or before the 31st December in each year and satisfy the Chairman or the Deputy Chairman, if called upon to do so, by production of tax receipts, title

deeds etc. that the house site or house remains in his/her sole ownership and that while he/she is still in service he/she has not parted with and undertaken not to part with the possession thereof by way of transfer, sale, mortgage, gift, exchange, lease or otherwise howsoever without the previous permission of the Chairman or the Deputy Chairman in writing. If the house or house-site is sold or encumbered at any time before retirement without such permission, or if a breach of any of the provisions of this regulation is committed, then the amount withdrawn shall be repayable by him/her forthwith in one instalment together with interest thereon at the above mentioned rate from the month of such withdrawal. In default, such subscriber will be liable for disciplinary action. (The detailed procedure for withdrawal under this Regulation is annexed as Appendix-I of Non-Contributory Provident Fund).

Regulation—19 : Non-refundable Marriage Withdrawal.

Subject to the sanction of the Chairman or Deputy Chairman, withdrawals, without obligation of repayment, may be granted at any time after the completion of 20 years of service of a subscriber or within 10 years before the date of his/her retirement on superannuation, whichever is earlier, from the amount standing to his/her credit in the Fund ordinarily upto 6 months' pay or of the accumulation whichever is less to meet the expenses in connection with the betrothal marriage of his/her daughter/s or the son/s or the dependent sister/s.

The sanctioning authority may, however, sanction the withdrawal of an amount in excess of this limit upto 3/4ths of the balance at his/her credit in the Fund having due regard to—

- (i) the status of the subscriber
and
- (ii) the amount to his/her credit in the Fund. The subscriber must submit declaration vide annexed Appendix III and IIIA duly completed.

CHAPTER—VI—OPTION & TRANSFER OF FUND

Regulation—20 : Subscriber's Account

Separate accounts shall be kept for each subscriber showing the monthly subscriptions of the subscriber and the interest thereon.

Regulation—21 : Transfer of Accounts—Option for Pension Scheme

If an employee, who is a subscriber of the Calcutta Port Trust Contributory Provident Fund is allowed to opt for the pension scheme, the amount of his/her own subscriptions with interest thereon standing to his/her credit in such Contributory Provident Fund shall be transferred to his/her credit in this Fund.

Regulation—22 : Transfer from other service

An employee who has joined the Calcutta Port Trust's service from any Government, Railway, Port Trust or Quasi-Government body wherein he/she was

a subscriber to the Provident Fund, without break of service, if he/she so desires, can have the amount standing to his/her credit, at the date of joining, in the said Provident Fund transferred to this Fund.

CHAPTER—VII

Regulation—23 : Payments for assurance in Life Insurance Corporation of India

Payments for assurance in Life Insurance

The amount of subscriptions with interest thereon standing to the credit of a subscriber in the Fund may be applied, either partially or wholly, for the purpose of payments of premia on a policy of assurance in the Life Insurance Corporation of India, subject to the following conditions :—

- (1) The Policy of Assurance (e.g. Endowment Policy) held by a subscriber with the Life Insurance Corporation of India on his/her own life after the 1st premium or the premium due before assignment, as the case may be, being paid by him/her be accepted by the Senior Accounts Officer on a written undertaking in a printed form made for the purpose if the subscriber desires to assign it to the Trustees.
- (2) On receipt of the policy from the subscriber through the concerned department along with the required documents (viz. Policy Bond, Letters of Authority, form of assignment and the last Premium Receipt, if the premium is paid by the policy holder more than one) and the subscriber's agreeing to comply with the conditions as laid down in the printed form necessary arrangement shall be made to forward the Policy Bond and the Form of Assignment to the Life Insurance Corporation of India for registration of assignment duly noted in the office registers maintained by the Provident Fund Section. The Policy Bond received back from the Life Insurance Corporation of India shall be kept under the safe custody of the office of the Senior Accounts Officer.
- (3) The mode of payment of premium of the policy if paid periodically by the subscriber shall be required to be converted by him/her into annuity before the same is assigned to the Trustees. The assigned policy cannot be hypothecated in any manner to the Life Insurance Corporation of India.
- (4) The premium of the policy of Assurance assigned by the subscriber shall be paid by the Senior Accounts Officer on behalf of the subscriber annually by debiting his/her subscriptions account and the premium so paid shall be recovered from his/her pay in twelve equal monthly instalments and credited to his/her subscriptions account in a specific column provided for the purpose. The department concerned will, however, be advised to deduct the amount from the subscriber's monthly salary bill regularly.

- (5) In the event of the subscriber taking leave without pay, the premium payable to the Life Insurance Corporation of India shall be paid from the balance standing at credit of the subscriber's account and the premium so paid shall be recovered from his/her pay on his/her resumption of duties. If the credit balance in the Fund is less than that of premium payable to the Life Insurance Corporation of India, the payment of premium will be suspended under intimation to the Life Insurance Corporation of India.
- (6) In the event of a policy maturing while the subscriber is still in service, the maturity value realised from the Life Insurance Corporation of India shall be credited to the subscriber's account and be refunded to him/her. If a policy under the old scheme payment of premium of which was to be financed out of the subscriber's account is subsequently converted into salary deduction scheme matures, the maturity value realised from the Life Insurance Corporation of India shall be refunded to the subscriber after deducting the premium paid from his/her subscription account.
- (7) If a subscriber desires to withdraw his/her policy of assurance from the custody of the Trustees before his/her retirement, the Senior Accounts Officer may allow him/her to do so and the Policy Bond may be made over to him/her duly re-assigned with proper intimation to the Life Insurance Corporation of India. He/she must reply the balance amount of that premium, if any, to the Fund.
- (8) If a subscriber rejects before the Policy as matured the Policy of assurance shall forthwith be re-assigned and made over to him/her.
- (9) If it appears at the time of the policy of assurance being matured that the same has not been duly assigned in favour of the Trustees or the registration of assignment was not duly complied with by the Life Insurance Corporation of India, the Senior Accounts Officer, will not taken the responsibility of realising the maturity value from the Life Insurance Corporation of India and the subscriber will immediately be informed to receive back the policy Bond from the custody of the Trustees.
- (10) If a subscriber dies while in service, the amount of premium payable under any policy which has been assigned by him/her to the Trustees will be stopped forthwith under intimation to the Life Insurance Corporation of India. The death claim proceeds of Insurance Policies shall be realised from the Life Insurance Corporation of India by the Trustees in case of the policies duly assigned and shall be credited to the unclaimed balance account for disposal of

the same to the legal heir/heirs of the Provident fund dues of the deceased subscriber. But in case of non-assigned policies, the policy Bonds will, however, be sent to the Life Insurance Corporation of India with due intimation to the legal heir/heirs of the deceased subscriber to contact the Life Insurance Corporation of India so as to enable him/her to realise the death claim proceeds direct from the Life Insurance Corporation of India.

- (11) Notwithstanding anything contained in the above Sub-regulations, the policies already assigned to the Trustees under the old scheme, payment of premium of which was to be financed out of the subscriber's account shall continue.

CHAPTER—VIII—Settlement of Provident fund Dues.

Regulation—24 : Payment to subscribers on Leaving Service :

A subscriber's accumulation in the Fund including interest shall be paid as soon as possible after his/her retirement, quitting service or death. Interest shall be credited to his/her account upto the end of the calendar month prior to the date of tender of payment.

Provided that in case of delays caused by the circumstances beyond the control of the subscriber or administrative delays in making the settlement, interest shall continue to be credited to his/her account upto the end of 1 (one) year after the month in which such amount become payable.

Regulation—25 : Payment of Subscribers Dues :

When a subscriber's accumulation in the Fund has become payable in accordance with Regulation 24 Senior Accounts Officer shall dispose of the amount as follows :—

Payment of subscriber's dues.

- (1) Pay to the subscriber OR
- (2) Pay, if the subscriber is dead, to the person or persons entitled to receive payment in the following manner :—
 - (a) If a valid nomination under Regulation 11 subsists, the amount or the part thereof to which the nomination relates shall be paid to the nominee or to person as may be authorised by law to receive payment on his/her behalf.
 - (b) If no valid nomination subsists or if the nomination relates only to a part of the amount, provided the whole amount or the part thereof to which the nomination does not relate, does not exceed Rs. 5,000 and provided notice of the existence of a will disposing of such amount and intention to prove the same be not given to the Senior Accounts

Officer, within one month of the death of the member or if such notice be given but such will is not probated within six months from the death of the member, such amount shall be paid in terms of Section 4(1)(b) of the Provident Funds Act, 1925 (XIX of 1925) to any person appearing to the Chairman or the Deputy Chairman to be entitled to receive it.

- (c) If the amount is not payable to any person under Clause (i) or (ii) above, it shall be paid to a person producing Probate or letters of Administration proving the grant to him of Administration to the estate of the deceased subscriber or a Certificate granted under Indian Succession Act 1925 (XXXIX of 1925), in terms of Section 4(1)(c)(ii) of the Provident Funds Act, 1925.

Regulation 26 : Payment to Minors

Payments on behalf of minor children shall be made to their guardian appointed under the Guardians and Ward Act, 1890 (VIII of 1890) or to other person authorised by law. Provided that payment on behalf of Hindu minors may be made to the mother and on behalf of Mohammedan minors to the Paternal grandfather without production of guardianship certificate.

Regulation 27 : Payment to Lunatics

If a subscriber's person to whom under these Regulations a payment has to be made or a policy to be reassigned, is a lunatic, payment or reassignment shall be made to the Manager appointed under the Indian Lunacy Act, 1912 (IV of 1912) or to other person authorised by Law.

Regulation 28 : Immunity From Attachment.

Subject to the provisions of Section 3 of the Provident Fund Act, 1925 (XIX of 1925), neither a subscriber nor any person on his/her behalf or in respect of his/her interest in the Fund shall, save as expressly provided by these Regulations, be entitled to claim or demand payment of any money standing in the name of the subscriber in the books of the Fund.

Regulation 29 : Payment on Leave Preparatory to Retirement and Post-superannuation Leave.

Leave Preparatory to Retirement and Post Superannuation Leave

In case of leave granted preparatory to retirement, a subscriber may be permitted, at the discretion of the Chairman or the Deputy Chairman, to withdraw up to 90 per cent of the audited balance standing to his/her credit in the Fund or part thereof as on 31st December of the year immediately preceding the year in which the subscriber proceeded on leave preparatory to retirement on submission of an application to the Senior Accounts Officer, such permission being subject to the condition that if in any exceptional case the subscriber does not eventually retire,

the full amount shall be refunded as a condition of continued employment. A payment made under this Regulation will not affect the subscriber's eligibility to continue subscription during such leave and to interest on the balance.

In case the subscriber has been granted post-superannuation leave he/she may be permitted, at the discretion of the Chairman or the Deputy Chairman, to withdraw up to 60 per cent of the balance standing to his/her credit in the Fund or part thereof as on 31st December of the year immediately preceding the year in which the subscriber has been granted post-superannuation leave, on submission of an application to the Senior Accounts Officer. If, however, the subscriber is occupying Calcutta Port Trust's quarters, such withdrawal shall be restricted to fifty per cent of the aforementioned credit.

CHAPTER IX—MISCELLANEOUS

Regulation 30 : Interpretation of Regulations

Interpretation of Rules

The decision of the Chairman, Calcutta Port Trust on all questions arising out of these regulations shall be final.

Regulation 31 :

Repeal and saving

(1) On the commencement of these regulations, Calcutta Port Trust Non-contributory Provident Fund Rules or order in force immediately before such commencement shall in so far as it provides for any of the matters contained in these Regulations, cease to operate.

(2) Any case which pertains to the settlement of Provident Fund dues of a subscriber who had retired before the commencement of these Regulations shall be disposed of in accordance with the provisions of the old rule as if these rules had not been made.

(3) Subject to the provision of Sub-regulation (2), anything done or any action taken under the old rule shall be deemed to have been done or taken under the corresponding provisions of these Regulations.

APPENDIX I

OF

CALCUTTA PORT TRUST

NON-CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND

REGULATIONS

(VIDE REGULATION 18)

Procedure to be followed in connection with the withdrawal of P.F. money for House Building purpose

Withdrawal may be for the following purposes :

I. Purchase of land including cost of building of a house thereon.

II. Acquiring of a suitable ready built house or a flat.

III. Repayment of a loan taken for acquiring a house or flat.

IV. Expenditure for reconstructing or making additions or alterations of subscriber's own house or flat or his/her ancestral house.

Before sanctioning the withdrawals under the above items, the Calcutta Port Trust should insist upon the subscriber signing and affirming before the Presidency Magistrate, Calcutta the enclosed declaration and fulfilling the following obligations :

(A) Re : Item I

- (a) He/she should satisfy the Calcutta Port Trust that the amount is actually required for purchasing the property and that he/she possesses or intends to acquire forthwith the right to build on the site on which the house is proposed to be built.
- (b) He/she should satisfy the Calcutta Port Trust that the amount withdrawn together with such other private savings as the subscriber may have will be sufficient to complete the property of the type proposed.
- (c) He/she should satisfy the Calcutta Port Trust by production of original title deeds or otherwise as may be directed by the Calcutta Port Trust that he/she will acquire marketable unencumbered and undisputed

title to the property proposed to be purchased.

(d) He/she should produce for the Calcutta Port Trust's inspection the agreement of sale (Baynapatra) within a week from the grant of the loan and the deed of conveyance within a fortnight from completion of purchase (production of conveyance will be possible only after the property has been purchased with the loan sanctioned by the Calcutta Port Trust).

(e) He/she should produce the sanctioned plans of the proposed building and permits from the local authority (where necessary) for purchase of building materials to the extent required at controlled rates.

(f) He/she should bear all costs and expenses whatsoever that Calcutta Port Trust may have to incur or be put to in this connection.

(B) Re : Item II

As in (a), (b), (c), (d) and (f) of A above.

(c) Re : Item III

He/she should satisfy the Calcutta Port Trust by production of documents and papers that there is a genuine subsisting loan expressly taken for the purpose of building or acquiring a house/flat for his/her own use.

CALCUTTA PORT TRUST
NON-CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND
NOMINATION FORM [VIDE Regulation 11(b)]

FORM - I

Particulars of previous Nomination —
Noted in Personal Account —

NAME DESIGNATION P.F. A/c NO. I, hereby declare that in the event of my death the amount standing at my credit in the Non-contributory Provident Fund of the Calcutta Port Trust shall be distributed among my dependants mentioned below in the manner shown against their names.

NAME/S OF THE NOMINEES (IN BLOCK LETTERS)	ADDRESS OF THE NOMINEES	RELATIONSHIP WITH THE SUBSCRIBER.	AGE OF NOMINEE ON DATE OF NO- MINATION	AMOUNT OR SHARE OF ACCUMULATION
-------------------------------------------------	----------------------------	--------------------------------------	----------------------------------------------	---------------------------------------

PLACE.....

DATE.....

SIGNATURE OF THE SUBSCRIBER

(1) NAME..... ADDRESS..... OCCUPATION..... SIGNATURE.....

(2) NAME..... ADDRESS..... OCCUPATION..... SIGNATURE.....

Note: A nomination is not valid if the nominee is not "dependant" as defined in Regulation 3(g) namely (a) in the case of a male subscriber or the wife, parent, child, minor, brother, unmarried sister and a deceased son's widow and where no parent of the subscriber is alive, a paternal grand parent and in the case of a (2) female subscriber the husband, child, deceased son's widow and child, her dependent parents and parents of her husband.

FORM II

APPENDIX-II

CALCUTTA PORT TRUST

NON-CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND

FORM II [vide Regulation 11(C)]

FORM OF NOTICE CHANCELLING A
NOMINATION

NAME _____

DESIGNATION _____

PROVIDENT FUND A/C No. _____

I hereby cancel the declaration made by me in
favour of _____as regards the disposal, in the event of my death, of
the amount standing at my credit in the Calcutta Port
Trust Non-Contributory Provident Fund.As witness my hand this _____ day of _____
_____ one thousand nine hundred and _____

Signature _____

Witness { Signature _____
Address _____
Occupation _____

Witness { Signature _____
Address _____
Occupation _____

The Senior Accounts Officer,
Provident Funds.

Forwarded for necessary action.

Signature _____

Date _____

Designation _____

APPENDIX-III of the Non-Contributory Provident
Fund Regulation (vide Regulation-19)Declaration for obtaining Non-refundable marriage
withdrawal.1. Name of daughter or sister (bride) or son (bride-
groom) _____2. Name of other daughters, sisters and sons yet
to be given in marriage _____3. Name, father's name and address of the pro-
posed bridegroom _____

4. Tentative date and place of marriage _____

5. Whether the above named sister is wholly de-
pendent on him/her _____I declare that if for any reason the marriage does
not take place within a month from the date of with-
drawal, or such other extended period as may be
allowed by the sanctioning authority, the amount so
advanced shall be refunded by me in full.I further declare that the above statements of mine
are true and in the event of any of the statements
being proved as false, I shall be held liable for dis-
ciplinary action.Signature or L.T.I. of the
Applicant P.F. A/C No. _____In cases of members who will put L.T.I. or sign
in language other than English.

Read over and explained to the applicant.

Signature & Designation

Section _____
Head of Section.Certificate to be submitted by any one of the fol-
lowing :—It is certified by me that Shri _____
of address _____
has got a marriageable daughter/sister, named Kumari
_____ and the above father and daughter/brother and sister
are known to me.

Signature

M.L.A. [Gazetted Officer]
Commissioner of a Municipality
Head Master of a H.S. School
President of Village Panchayat.

Date _____

Office Seal

APPENDIX-III of the Non-Contributory Provident

Fund Regulations (Vide Regulation—19)

Declaration to be submitted by the applicant within one month from the date of marriage.

S.A.O. P.F.

C.P.T.

Through Head of Department

I hereby declare that the marriage ceremony of my daughter/sister— for which I was allowed a non-refundable withdrawal of Rs. — from my P.F. A/c. No. — has been solemnised on—.

Signature L.P.I. of
the member

S.A.O., P.F.

Forwarded.

Head of Department

N.B.—Enquiry may be arranged by S.A.O.P.F. at the address furnished by the member to be satisfied with the actual occurrence of the marriage ceremony, if thought necessary.

APPENDIX-IV**FORM OF ASSIGNMENT OF POLICY TO BE PASTED ON THE POLICY**

(Vide Regulation No. 23)

POLICY NO.

I, — do hereby under Regulation 23(i) of the Calcutta Port Trust's Non-Contributory Provident Fund, assign all my right, title and interest in the Policy No. — under the Life Insurance Corporation of India to Calcutta Port Trust to enable them to collect at maturity the amount on the said Policy with accrued profits which is to be held in trust of myself in the Calcutta Port Trust's Non-Contributory Provident Fund. In the event of my death prior to retirement, I desire the amount to be paid to my Nominee in the Non-contributory Provident Fund or in the event of Nominee's death before payment, to the executors of my Will or to my legal heirs if I die intestate. In the event of my leaving service the Policy is to be re-assigned and made over to me on demand.

Dated, at — this — day of — 19

Witness :

(Signature)

— N.C.P.F. A/c. No.

